रिकॉर्डः– (यो)गी आया लेके संदेशा..... ओम् शांति। ये मिक्सचर गीत है। भगवान खुद ही आया है संदेशा देने कि मैं आया हूँ। ऐसा संदेशा सिर्फ एक ही बार देते हैं। बाप कहते हैं, मैं फिर से आया हूँ सहज ज्ञान और सहज योग सिखाने। उनको योगेश्वर कहा जा सकता है। अर्थात् ईश्वर योग और ज्ञान सिखलाने आया है। यह तुम बच्चे जानते हो कि मैं फिर से तुमको राजयोग और ज्ञान सिखाने आया हूँ। यह भी एक पढ़ाई है। इस पढ़ाई से तुम 21 जन्मों के लिए प्रालब्ध पाते हो। यूँ तो जो पुरुषार्थ किया जाता है उसकी प्रालब्ध उसी जन्म में भोगी जाती है। 15–20 वर्ष पढ़कर फिर 50–60 वर्ष तक इसी जन्म में उसकी प्रालब्ध भोगते हैं; परन्तु यह तो वंडरफुल नॉलेज है, जो भगवान खुद आए भक्तों को पढ़ाते हैं; क्योंकि ज्ञान से भक्तों की सद्गति करनी है। भक्ति से तो भक्तों की दुर्गति होती है। यह दुनिया नहीं जानती। वे तो सद्गति को ही नहीं जानते, दुर्गति को ही सद्गति समझते हैं। समझते हैं कि जप,तप,तीर्थ से भगवान को प्राप्त करेंगे; परन्तु भगवान को तो हम तब प्राप्त करते हैं जब वो खुद आकर हमको ज्ञान देते हैं। भक्ति तो सभी करते हैं। सभी गुरु लोग भी भक्ति ही सिखाते हैं। वेद–शास्त्र पढ़ना, यह भी तो भक्तिमार्ग है। जब भक्ति का अंत होता है तब भगवान आते हैं भक्तों को ज्ञान देने। भक्ति भी पहले–2 अव्यभिचारी सतोप्रधान थी। एक की भक्ति करते थे। इस समय तो तमोप्रधान, व्यभिचारी भक्ति है। अब भक्ति खतम होने वाली है। जब अव्यभिचारी भक्ति थी तो कुछ दम था, अब तो सब झूठ हैं। झूठे शास्त्र पढ़ना, झूठे चित्र बनाना, तीर्थों आदि पर धक्का खिलाना। कितनी मनुष्यों की दुर्गति करते हैं; परन्तु मनुष्य थोड़े ही समझते हैं। भगवान समझाते हैं कि ये तुमको आदि–मध्य–अंत दुख देते हैं। ऐसी तो मनुष्यों की बुद्धि हो गई है, जो गीता पढ़ते हैं कि भगवान ने भी कहा है कि काम महाशत्रु है, फिर भी कहते– इस बिगर सृष्टि कैसे चलेगी! सतयुग में इसका नाम–निशान नहीं है तो वहाँ आदि–मध्य–अंत सुख है। अकाले मौत नहीं होता; इसलिए उसको अमरलोक कहा जाता है। यहाँ अकाले मृत्यु होता है; इसलिए यह मृत्युलोक कहलाता है। यह ज्ञान है अमरलोक के लिए। हमारे इस समय के पुरुषार्थ से भविष्य जन्म–जन्मांतर की प्रालब्ध बनती है; इसलिए पुरुषार्थ कर ऐसी अच्छी प्रालब्ध बनानी है। फिर कल्प–2 ऐसी ही प्रालब्ध बनेगी। इस समय फेल हुआ तो जन्म–जन्मांतर, कल्प–कल्पांतर फेल होंगे। तुम मात–पिता... यह महिमा तो है एक निराकार की। फिर साकार में भी पहले–2 ये मम्मा–बाबा हैं। तो उनको फॉलो करना है। इनको पहले नम्बर में तो आना ही है। बाकी बच्चों की रेस है। 84 जन्म भी इनके बताए हैं। कहते हैं, तुम अपने जन्मों को नहीं जानते, मैं बताता हूँ। बाबा ने इसकी प्रालब्ध बताई है कि यही श्री ना० बनते हैं। बाकी बच्चों की अभी नहीं बताई है, रेस चल रही है। घोड़ो की रेस होती है ना। इनको भी अश्व कहा जाता है। ये ईश्वरी(य) लॉटरी के ह्युमन अश्व हैं। देखने में आता है, अच्छे–2 पुराने घोड़े दौड़ते–2 पीछे हट जाते हैं। नए–2 आगे तीखे चले जाते हैं। एक्सीडेंट भी होते हैं। उस रेस में तो 10–12 घोड़े दौड़ते हैं, यहाँ तो हज़ारों हैं। देखते हो, कैसे नए तीखे जा रहे हैं; जैसे उषा–रमेश बॉम्बे वाले हैं। पहले तो वो लौकिक मनुष्यों की मनाई गीता पढ़ते–पढ़ाते थे। व्यास भी तो मनुष्य था वा शरीरधारी। बाबा कहते हैं, मुझे तो अपना शरीर नहीं है। तो वो गीता हो गई जिस्मानी मनुष्यों की। सच्ची गीता तो निराकार प० ने गाई है। फिर तो वह ज्ञान ही गुम हो जाता हे। रामायण आदि शास्त्र तो सब पीछे बनते हैं। तो

तुम बच्चे जानते हो कि ये हमारी भविष्य जन्म–जन्मांतर की रेस है। इस समय बहुत पुरुषार्थ करना है। तुम देखते हो, नए–2 बहुत तीखे होते जाते हैं। पुराने तो दौड़ी पहनते–2 जैसे थक गए हैं, लंगड़े हो गए हैं। चींटी मार्ग में चलते रहते हैं। सेन्टर संभालना भी नहीं पहुँचता। वहाँ तो देवी करके पूजी जाती हैं। बाबा भी बहुत मदद करते हैं। तो जिज्ञासु बहुत प्यार करते हैं। कोई बच्ची को बदली करता हूँ तो रो पड़ते हैं कि ये हमारा टीचर मत लिओ। ये तो हमको बहुत सुख देती है। इतना मान मिलता है, फिर भी जाती नहीं हैं। भगवान इतना मर्तबा देते हैं तो लेती नहीं हैं। तो बाप समझाते हैं कि इस समय तेरा पुरुषार्थ बड़ा जबरदस्त है। थोड़ी गफलत से तुम अपनी तकदीर को लकीर लगाती रहती हो। अपने ऊपर कुछ तरस करो। मैं तो राजयोग सिखाने आया हूँ; परन्तु तुम भी कृपा करके पढ़ो ना, सर्विस करो ना। प्रजा भी तो बनानी है। यह बहुत वंडरफुल नॉलेज है। भगवान खुद ओबीडियेंट टीचर आकर बना है। सो भी देखो, पढ़ाते किनको है– अहिल्याएँ–कुब्जाएँ, चरी–खरी, गरीबों का आकर स्कूल खोला है। कमाल है! गरीब ही उठाते हैं। 100 गरीबों में एक साहुकार आता है। साधारण अच्छा उठाते हैं। साहुकार तो कह देंगे, ज्ञान तो बहुत अच्छा है; परन्तु फुर्सत नहीं है। अरे, 21 जन्मों के कमाई लिए फुर्सत नहीं है! तुम 10 करोड़ को 15 करोड़ बनाने में बिज़ी हो; परन्तु ये तो सभी मिट्टी में मिल जाने हैं। साथ तो यही कमाई चलनी है। तेरे ये करोड़ तेरे बाल–बच्चे भी नहीं खाए सकेंगे। न तेरे काम आएँगे, न तेरे बच्चों के काम आएँगे; परन्तु तकदीर में न है। यहाँ तो भगवान खुद पढ़ाए रहे हैं। अगर कृष्ण पढ़ाते होते तो क्या समझती हो, सारी रशिया, अमेरिका, अफ्रीका सभी यहाँ आ जाते। यहाँ भगवान पढ़ाते भी देखो किनको हैं। कोई प्रिंस–प्रिंसेज़ को पढ़ावे तो भी ठीक। यहाँ अहिल्याएँ, कुब्जाएँ, भीलनियों को कैसे श्री कृष्ण पढ़ावेगा! साहुकारों को मज़ा नहीं आएगी। लिखा भी है, ऐसी पत्थरबुद्धि, गरीबों को पढ़ाया है, फिर भी समझते नहीं कि श्री कृष्ण ने कैसे पढ़ाया होगा। मनुष्यों के बुद्धि को जैसे ताला लगा हुआ है। वो खुले कैसे? बाबा आए इन अबलाओं, माताओं का ताला खोलते हैं; परन्तु इन्होंने गीता पर कृष्ण का नाम डाल सारा खण्डन कर दिया है। समझते हैं, निराकार प० कैसे आवेंगे। सन्यासियों ने तो शिवोहम् कह भगवान को सर्वव्यापी करके भगवान का नशा ही गुम कर दिया है। कितने मनुष्य मूँझे हुए हैं। माया रावण ने पत्थरबुद्धि बनाए दिया है। बड़े–2 विद्वान–आचार्य को घमंड कितना है। अब बॉम्बे में एक है, जो 112वाँ गीता ज्ञान यज्ञ रच रहे हैं। उनके भी बहुत फॉलोअर्स हैं। अब भगवान ने तो एक ही बार आकर गीता ज्ञान सुनाया। ये यज्ञ रचते–2 ही मर जाएँगे। कितना मनुष्यों को दुबण में फँसाते हैं। बच्चों में हिम्मत चाहिए, जो गवर्मेन्ट को कहें कि ये क्या कर रहे हैं। बाप कहते हैं, मेरे सामने भी देखो कितने आर्टीफिशल गीता सुनाने वाले हैं। इसलिए सच्ची गीता ज्ञान समझने में मनुष्य मूँझते हैं। जंगल से निकालने में तकलीफ होती है। काँटे भी सहन करने पड़ते हैं। विद्वान–पंडित सामना करते हैं। यह ज्ञान तो बड़ा सहज है। बाप कहते हैं, अपन को ब्रह्माण्ड का मालिक समझो। फिर आकर सृष्टि के मालिक बनेंगे। अपन से भी ऊँचा पद बच्चों को देते हैं। कैसा बाबा वंडरफुल जादूगर है! बाबा की नॉलेज भी फर्स्ट क्लास, तो पद भी फर्स्ट क्लास; बल्कि एअर कंडीशन, जहाँ न सर्दी, न गर्मी, सदा बहार है। फागून की मौसम सदा रहती है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ